डॉ॰ कविता कुमारी सिंह
हिन्दी - विभाग
आर॰ एन॰ कॉलेज

वर्ग XII

'बातचीत' पाठ का सारांश —

बालकृष्ण भट्ट बातचीत निबन्ध के माध्यम से मनुष्य को ईश्वर द्वारा दी गई अनमोल वस्तु वाक्शक्ति का सही प्रयोग करने की प्रेरणा देते हैं। वे बताते हैं कि यदि वाक्शक्ति मनुष्य में न होती तो हम नहीं जानते कि इस गूंगी सृष्टि का क्या हाल होता है। सबलोग लुंज-मुंज से एक कोने में बैठा दिये गये होते। वे बातचीत के विभिन्न तरीके भी बताते हैं, यथा- घरेलू बातचीत मन रमाने का ढंग है। वे बातचीत

का महत्व बताते हैं कि जैसे आदमी को अपनी जिन्दगी मजेदार बनाने के लिए खाने-पीने, चलने-फिरने आदि की जरूरत है, बातचीत की भी अत्यन्त आवश्यकता है। जो कुछ मवाद या धुँआ हृदय में जमा रहता है, वह बातचीत के माध्यम से भाप बनकर निकल पड़ता है। उससे हल्का और स्वच्छ हो परम आनन्द में मग्न हो जाता है।

मनुष्य जबतक बोलता नहीं तबतक उसका गुण-दोष नहीं प्रकट होता है। 'बेन जानसन' का कहना है कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार हो जाता है। यूरोप के लोगों में बातचीत का हुनर है जिसे आर्ट ऑफ कनवरसेशन कहते हैं। इस प्रसंग में ऐसे चतुराई से प्रसंग छेड़े जाते हैं कि उन्हें सुनकर अत्यन्त

सूरत मिलता है। हिन्दी में इसका नाम सुहृद गोष्ठी है।
बालकृष्ण भट्ट बातचीत का उत्तम तरीका यह
मानते हैं कि हम वह शक्ति पैदा करें कि अपने आप
बात कर लिया करें। बातचीत में भाव अर्थपूर्ण रूप से
स्पष्ट होना चाहिए। बातचीत के संबंध में 'बेन जॉनसन'
का मत है कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार
होता है। यह बहुत ही उचित जान पड़ता है।
'एडीसन' का मत है कि असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों
में हो सकती है, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि जब दो
आदमी होते हैं, तभी अपना दिल एक-दूसरे के सामने
खोलते हैं। जब तीन हुए तब वह दो बात कोसों दूर गयी।
कहा जाता भी है कि छह कानों में पड़ी बात खुल जाती है।
जैसे गरम दूध और ठंडे पानी के दो
बर्तन पास-पास सटाकर रखने पर एक का असर
दूसरे में पहुँच जाता है अर्थात दूध ठंडा

हो जाता है और पानी गरम। वैसे ही दो आदमी आपस
में पास बैठे हों एक का गुप्त असर दूसरे पर पहुँच
जाता है। हमारी भीतरी मनोवृत्ति जो प्रतिक्षण नये-नये
रंग दिखलाया करती है जो बाह्य प्रपंचात्मक संसार का
एक बड़ा भारी आईना है जिसमें जैसी चाहें वैसी
सूरत देख लेना कुछ दुर्घट बात नहीं है और जो
एक चमनिस्तान है, जिसमें हर किस्म के बेल-बूटे खि
हुए हैं। इस चमनिस्तान की सैर क्या कम है?
मित्रों का वार्तालाप कभी इसकी 16 वीं कला तक पहुँ
सकता है। इसी सैर का नाम ध्यान या मनोयोग
या चित्त का एकाग्र करना है, जिसका साधन